बीमारू के बाद अब डीमारू राज्य

आशीष बोस

2001 के जनगणना आयुक्त ने तुरन्त ही इस दुखद तथ्य को पहचान लिया कि बहुत सारे राज्यों के बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में भारी गिरावट आई है। इस तथ्य की व्याख्या आप्रवास के आधार पर नहीं की जा सकती है। यह शायद सीधे-सीधे लड़कियों की हत्या अथवा लड़कियों की अपेक्षाकृत अधिक मृत्यु दर का परिणाम न हो, लेकिन इसमें मादा भ्रूण हत्या का हाथ ज़रूर है। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है कि प्रगतिशील माने जाने वाले दक्षिण भारतीय राज्यों में भी, केरल को छोड़कर अन्य सभी राज्यों में बाल लिंग अनुपात में कमी आई है।

विश्व में कहीं भी जनगणना सम्पन्न कराना एक अत्यंत कठिन कार्य है। भारत जैसे वृहद जनसंख्या एवं विविधताओं वाले देश में तो यह और भी मुश्किल है। बहुत से पाश्चात्य देशों में जनगणना को निजता (प्राइवेसी) के हनन के आधार पर चुनौती दी गई है। कुछ देशों में इसे महत्वहीन माना जाता है क्योंकि वहां पंजीयन और आप्रवास की सूचना रखने की बेहतर व्यवस्था है। भारत में नियोजन और नीति निर्धारण के लिए जनगणना काफी उपयोगी मानी जाती है। बहुत सारे नमूना सर्वेक्षणों के बावजूद जनगणना लोगों के जीवन के बारे में सूचना देने का एकमात्र महत्वपूर्ण स्त्रोत है।

अंग्रेज़ों ने जनगणना की शुरुआत 1872 में की थी और 1881 से प्रत्येक दसवें साल हमारे यहां जनगणना होती रही है। सन् 2001 की जनगणना इस क्रम की 14वीं और स्वतंत्रता के बाद की 6ठी है। दुनिया के कम ही देशों के पास दस वर्षीय जनगणना को लगातार सम्पन्न कराने का अटूट रिकार्ड है। अंग्रेज़ों ने जनगणना के लिए राजस्व अधिकारियों और विद्यालयों के शिक्षकों का 'स्वैच्छिक' आधार पर उपयोग किया था और इसके लिए उन्हें कोई विशेष भुगतान भी नहीं दिया जाता था।

जनगणना कार्य के पूर्व व दौरान की गई अपनी यात्राओं के क्रम में मैने स्वयं जनगणना कर्मियों में उत्साह की कमी को महसूस किया। जनसंख्यात्मक संवेग, एक शब्द जो तकनीकी जनसंख्या विज्ञान में सम्भावित जनसंख्या वृद्धि पर उम्र-वितरण के प्रभाव को दर्शाता है, के बदले मैं भारत में जनगणना कराने की प्रक्रिया की व्याख्या हेतु जनगणना संवेग जैसे शब्द का इस्तेमाल करना चाहूंगा। प्रत्येक जनगणना आयुक्त प्रश्नावलियों और इसकी वर्गीकरण योजना में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ वही करता है जो अब तक होता आया है तथा नौकरशाही, जो प्रकृति से ही लकीर की फकीर होती है, में ज़िला अधिकारी से लेकर जनगणना आयुक्त तक एक श्रंखला बन जाती है और येन-केन-प्रकारेण जनगणना सम्पन्न हो जाती है।

जनगणना कर्मियों के लिए मानदेय स्वरूप थोड़ी सी राशि की व्यवस्था 1961 से शुरू की गई तथा इसमें धीरे-धीरे बढ़ोत्तरी होती गई। लेकिन यह स्पष्ट होता गया कि ये तथाकथित स्वैच्छिक-जनगणनाकर्मी स्वैच्छिकता से कोसों दूर थे तथा जनगणना के कार्य को अनिच्छापूर्वक करते थे। समय के साथ स्थिति खराब ही होती गई है। इस उपभोगवादी दौर में महज़ राष्ट्रभक्ति की अपील से काम चलने वाला नहीं।

2001 के जनगणना आयुक्त, जे. के. बांठिया को इस बात का श्रेय जाता है कि उन्होंने जनगणना को सुचारु रूप से सम्पन्न करा लिया और विपत्तियों में फंसे राज्य जम्मू और कश्मीर में भी इसे सम्भव बना दिया। उन्हें एक अन्य गंभीर समस्या से भी जूझना पड़ा क्योंकि सन् 2000 में तीन नए राज्य झारखण्ड, छत्तीसगढ़ तथा उत्तरांचल निर्मित हुए। इस कारण कई प्रशासनिक समस्याएं खड़ी हुईं।

जनगणना 2001 में किस हद तक अल्प-गणना की गई है इस पर तथा इसके आंकड़ों की गुणवत्ता पर टिप्पणी

जनगणना आयुक्तों की पहल की कोशिशें

जनगणना आयुक्तों की भूमिका को कम करके आंकने की मेरी कोई मंशा नहीं है। आर.ए. गोपालास्वामी ने विभाजन के तुरन्त बाद 1951 में न सिर्फ जनगणना सम्पन्न कराने का बल्कि उसका विश्लेषण कर जनसंख्या सम्बंधी खतरों की गंभीरता से देश को आगाह करने का उल्लेखनीय काम किया। उनके द्वारा दिया गया शब्द 'असावधान मातृत्व' तो आज और ज़्यादा प्रासंगिक है। उन्होंने विस्थापित लोगों पर उपयोगी आंकड़े इकट्ठे किए थे ताकि शरणार्थी समस्याओं का आकलन किया जा सके। किन्तु आत्मनिर्भर, कमाऊ-निर्भर तथा अकमाऊ-निर्भर के रूप में लोगों के वर्गीकरण का उनका तरीका मज़दूर वर्ग की व्याख्या करने तथा राष्ट्रीय आय सम्बंधी सांख्यिकी को स्पष्ट करने में अक्षम साबित हुआ। उनके उत्तराधिकारी अशोक मित्र ने 1961 की जनगणना को एक व्यापक आयाम दिया तथा भारत की जनगणना प्रक्रिया को विश्व के नक्शे पर स्थापित कर दिया। मकान सूची प्रक्रिया के माध्यम से इकट्ठा किए गए विभिन्न आंकड़ों, प्रश्नावली व वर्गीकरण योजना में उल्लेखनीय परिवर्तनों, बहुतेरे तात्कालिक उपयोग वाले सर्वेक्षणों (ग्राम सर्वेक्षण, हस्तशिल्प सर्वेक्षण, मेलों और त्यौहारों की सूची इत्यादि) की शुरुआत तथा सामाजिक अध्ययनों पर उनके ज़ोर देने के कारण 1961 की जनगणना एक मील का पत्थर साबित हुई। उनके उत्तराधिकारियों ए.चंद्रशेखर (1971), पी. पद्मनाभ (1981) तथा ए.आर. नन्दा (1991) ने जनगणना की परम्पराओं को बनाए रखा तथा इसमें कई सकारात्मक परिवर्तन भी किए।

करना अभी जल्दबाज़ी होगी। जनगणना पश्चात् सर्वे जारी है तथा एक साल के भीतर-भीतर हमें 'कवरेज दोष' तथा 'विषयवस्तु दोष' के बारे में एक हद तक जानकारी प्राप्त हो जाएगी।

प्राथमिक परिणाम

2001 की जनगणना की एक स्वागत योग्य विशेषता यह है कि जनगणना के प्राथमिक परिणाम दिखाती 184 पृष्ठ की एक मूल्य अंकित पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। इस प्रक्रिया का पालन अधिकांश राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के जनगणना निदेशकों ने किया है। पहले की जनगणनाओं में, अन्तरिम तालिकाएं आम जनता के लिए उपलब्ध नहीं रहती थीं। आंकड़ों की उपलब्धता इस बार बहुत बेहतर है। फिर भी एक मुश्किल है। राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों के आंकड़े उनके अक्षर-क्रम के आधार पर नहीं बल्कि क्षेत्रों के अनुसार भौगोलिक क्रम में दिए गए हैं। तालिकाएं जम्मू और कश्मीर से आरम्भ होती हैं और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर खत्म होती हैं। यह राष्ट्रीय सद्भाव के लिए अच्छा हो सकता है परन्तु जनगणना-आंकड़ों के इस्तेमालकर्ता के लिए बड़ा दुरूह हो जाता है; उसे या तो पूरी तालिका को छानना पड़ता है या फिर प्रत्येक राज्य का कोड देखना पड़ता है।स्तम्भालेख भी अधिकांशतः इसी तरीके से प्रस्तुत किए गए हैं। उदाहरण के लिए साक्षरता दर को घटते या बढ़ते क्रम में दर्शाने की बजाए इसका स्तम्भालेख जम्मू और कश्मीर से शुरू होकर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर समाप्त होता है। इस तरह चार्ट या ग्राफ द्वारा चित्रात्मक प्रस्तुति का उद्देश्य धरा रह जाता है। यदि भारत की जनगणना की सारी तालिकाएं अन्तिम रूप से इसी प्रकार प्रस्तुत कर दी गईं तो जनगणना आंकड़ों से जानकारी प्राप्त करना रेल्वे टाइम-टेबल देखने जैसा ही दुरूह काम हो जाएगा।

आम तौर पर भारतीय जनगणना में जनसंख्या को उम्र के लिहाज़ से पांच-पांच वर्ष के उम्र समूहों (0-4, 5-9, 10-14 आदि) में बांटा जाता रहा है। लेकिन 1991 की जनगणना में यह तय किया गया था कि 7 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों की साक्षरता दर निकाली जाएगी। इसलिए 0-6 वर्ष का एक नया उम्र समूह जोड़ा गया। वैसे 0-6 वर्ष उम्र समूह समेकित बाल विकास योजना, टीकाकरण आदि के प्रभाव की जांच के लिए भी

लिंग-अनुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या)

0-6 उम्र-समूह की जनसंख्या के लिंग-अनुपात में कमी के अनुसार राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों को क्रमबद्ध किया गया है

श्रेणी	भारत/राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लिंग अनुपात (0-6 उम्र समूह)			लिंग अनुपात (7 से ज़्यादा उम्र समूह)		
		1991	2001	अंतर	1991	2001	अंतर
	अखिल भारत	**945**	**927**	**-18**	**923**	**935**	**12**
1.	पंजाब	875	793	-82	883	886	3
2.	हरियाणा	879	820	-59	862	869	7
3.	हिमाचल प्रदेश	951	897	-54	980	981	1
4.	चंडीगढ़	899	845	-54	772	763	-9
5.	गुजरात	928	878	-50	936	927	-9
6.	दिल्ली	915	865	-50	810	813	3
7.	उत्तरांचल	948	906	-42	933	976	43
8.	दादरा और नगर हवेली	1013	973	-40	936	779	-157
9.	दमन और दीव	958	925	-33	971	682	-289
10.	गोवा	964	933	-31	967	964	-3
11.	महाराष्ट्र	946	917	-29	931	943	-8
12.	अरुणाचल प्रदेश	982	961	-21	829	888	59
13.	नागालैण्ड	993	975	-18	865	899	34
14.	उड़ीसा	967	950	-17	972	976	4
15.	बिहार	953	938	-15	895	916	21
16.	मणिपुर	974	961	-13	955	981	26
17.	झारखण्ड	979	966	-13	908	936	28
18.	मध्यप्रदेश	941	929	-12	905	918	13
19.	मेघालय	986	975	-11	947	974	27
20.	उत्तरप्रदेश	927	916	-11	863	895	32
21.	असाम	975	964	-11	910	926	16
22.	कर्नाटक	916	949	-11	960	966	6
23.	आन्ध्रप्रदेश	975	964	-11	972	980	8
24.	छत्तीसगढ़	984	975	-9	986	992	6
25.	तमिलनाडु	948	939	-9	978	992	14
26.	अंडमान व निकोबार	973	965	-8	790	830	40
27.	राजस्थान	916	909	-7	908	925	17
28.	पांडिचेरी	963	958	-5	982	1007	25
29.	पश्चिम बंगाल	967	963	-4	907	99	22
30.	मिज़ोरम	959	971	2	911	932	21
31.	केरल	958	963	5	1049	1071	22
32.	त्रिपुरा	967	975	8	940	947	7
33.	सिक्किम	965	986	21	860	858	-2
34.	लक्षद्वीप	941	974	33	943	943	0
35.	जम्मू और कश्मीर	-	937	-	-	894	-

सुविधाजनक है। साक्षरता दर के मामले में भी इसी का अनुसरण किया गया है; यहां 0-6 वर्ष की आबादी को अलग कर दिया गया है। इस प्रक्रिया का एक लाभ यह हुआ कि 0-6 वर्ष उम्र समूह के लिए लिंग वितरण (लड़के-लड़कियों) के आंकड़े अलग से उपलब्ध हुए हैं। किन्तु यह कुछ ही राज्यों में सम्भव हो पाया है। उन राज्यों में ऐसे आंकड़े प्रारम्भिक तालिकाओं में नहीं हैं जिन्होंने अलग से इस उम्र के लिंग अनुपात की चिन्ता ही नहीं की। इस बात का श्रेय जनगणना आयुक्त को जाता है कि उन्होंने फौरन पहचान लिया कि कई राज्यों में 0-6 वर्ष के बच्चों में लड़कियों का अनुपात घट रहा है।

जनगणना 2001 से संकलित आंकड़ों के आधार पर तैयार की गई यहां प्रस्तुत तालिका में राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों को 0-6 आयु समूह के लिए लिंग-अनुपात में घटते हुए क्रम से दर्शाया गया है। इससे जनगणना 2001 के प्राथमिक परिणामों से निकला सबसे चिन्ताजनक पहलू उजागर होता है। गौरतलब है कि सात और उससे ऊपर के उम्र समूह का आंकड़ा आप्रवास की प्रक्रिया से प्रभावित होता है। उत्तरांचल में लिंग अनुपात 7 साल से अधिक उम्र समूह के लिए 933 से 976 यानी 43 अंक बढ़ गया है। महिलाओं की अवस्था में सकारात्मक परिवर्तन दिखलाने के बजाए, यह पहाड़ों से पुरुषों के पलायन के प्रभाव तथा महिलाओं पर बढ़ते बोझ को प्रदर्शित करता है।

केवल केरल, त्रिपुरा तथा मिज़ोरम ही ऐसे राज्य हैं जहां दोनों उम्र समूहों, 0-6 तथा 7 साल से अधिक, में लिंग-अनुपात में वृद्धि हुई है। 0-6 उम्र-समूह के लिए लिंग-अनुपात में सबसे दुखद कमी पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, गुजरात और दिल्ली में आई है। उसके बाद उत्तरांचल, गोवा और महाराष्ट्र आते हैं।

इस परिस्थिति की व्याख्या आप्रवास के आधार पर नहीं की जा सकती है। यह शायद लड़कियों की हत्या अथवा लड़कियों की अपेक्षाकृत अधिक मृत्यु दर का परिणाम न हो, लेकिन इसमें मादा भ्रूण हत्या का हाथ ज़रूर है। जनगणना आयुक्त अपनी रिपोर्ट में ठीक ही उल्लेख करते हैं : ''एक बात तो स्पष्ट है - प्रारंभिक उम्र समूह में जो असंतुलन की स्थिति बनी है, उसकी भरपाई करना मुश्किल है और यह आने वाले काफी समय तक जनसंख्या पर प्रतिकूल प्रभाव डालती रहेगी। कम से कम इतना तो कहा ही जा सकता है कि 0-6 उम्र समूह की जनसंख्या में 927 का लिंग अनुपात देश के भविष्य के लिए जनसंख्यात्मक रूप से शुभ संकेत नहीं लगता है।''

1980 के दशक में मैंने बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश को 'बीमारु' राज्यों की संज्ञा दी थी। यह आज एक प्रचलित शब्द है। 2001 की जनगणना के नतीजे मेरी इस धारणा की पुष्टि करते हैं कि ये 'बीमारु' राज्य देश की जनसंख्या समस्या के लिहाज़ से एक नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। 2001 की जनगणना में 'बीमारु' राज्यों और उनसे बने नए राज्यों की स्थिति और बिगड़ी ही है। उदाहरण के लिए, बिहार में जनसंख्या की दशकीय विकास दर 1981-91 के 23.4 प्रतिशत की तुलना में 1991-2001 के दौरान बढ़कर 28.4 प्रतिशत हो गई है। पिछले दशक के दौरान निरक्षरों की जनसंख्या बढ़ गई है। 'बीमारु' राज्यों में बिहार निश्चित ही अव्वल है।

2001 में बाल-लिंग अनुपात में आई अशोभनीय गिरावट को देखते हुए, मैं एक नया शब्द-संक्षेप प्रस्तुत करना चाहूंगा- 'डीमारु', जिसमें डी का अर्थ है डॉटर्स (बेटियां) तथा मारु का अर्थ है मारना। इसी तरह अंग्रेज़ी में ई भी एलिमिनेशन अर्थात खात्मे को प्रदर्शित करेगा। बाल-लिंग अनुपात में 50 अंक से अधिक की गिरावट के आधार पर मैं पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा गुजरात को 'डीमारु' राज्यों की श्रेणी में रखना चाहूंगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि केरल को छोड़कर बाकी सभी प्रगतिशील दक्षिण राज्यों में भी बाल-लिंग अनुपात गिरा ही है। क्या सारा देश 'डीमारु' होता जा रहा है?

(स्रोत फीचर्स)